3

कक्षा में बोल कर पढ़ने से समझने तक

सावन कुमारी*

सर्वप्रथम लेख के शीर्षक की सीमाएँ और विस्तार उल्लेखनीय हैं। पठन-कार्य तो हर विषय की कक्षाओं में सामान्यत: होता ही है, पर इस लेख में सीमा है – भाषा की कक्षाओं में। इस लेख में 'पढ़ना' शब्द का इस्तेमाल किया गया है, जिसका अर्थ 'Reading' से है। इसको लिखने का उद्देश्य 'बोल कर पढ़ने' की प्रक्रिया को समझने से है। मेरे द्वारा सरकारी विद्यालयों में किए गए अनुभवों, कुछ शिक्षक और छात्रों के साथ बातचीत के आधार पर इस लेख को लिखा गया है। इस लेख की रूपरेखा कुछ इस तरह से है। सबसे पहले, 'पढ़ने का मतलब समझना है' हम इस बारे में संक्षेप में चर्चा करेंगे। फिर, छात्रों द्वारा कक्षा में बोल कर पढ़ने की प्रक्रिया को एवं शिक्षक-छात्रों के विचार और भूमिका का अवलोकन करेंगे। अंत में कुछ बातों पर विचार करते हुए हम निष्कर्ष पर पहुँचेगे।

पढ़ना सीखना-सिखाना, यह कक्षा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। पढ़ना (reading) सीखने की शुरुआत प्राथमिक कक्षाओं से ही की जाती है। यह एक मानी हुई बात है कि इस कौशल का विकास ज़रूरी है। विडंबना यह है कि दस से बारह शैक्षणिक वर्षों के बाद भी (कुछ) बच्चे इस कौशल में पारंगत नहीं हो पाते इसलिए इस विषय पर विमर्श की आवश्यकता है।

मूलतः हम पढ़ते हैं, जानकारी हासिल करने के लिए। पठन कौशल के प्रयोग की आवश्यकता हमारे दैनिक जीवन में अधिकतर स्थान और समय पर होती है। इस कौशल के प्रयोग के अवसर अनेक हैं, उदाहरण – हर गली, मोहल्ले, बाज़ार में परिचयात्मक नाम, शब्द, नंबर, आदि लिखित होते हैं, जिन्हें पढ़कर समझने की ज़रूरत पड़ती है। विभिन्न उपयोगी सामानों के पैकेटों पर सूचनाओं की भरमार होती है; उसके प्रयोग से संबंधित ज़रूरी निर्देशिका छपी होती है। प्रयोग से पहले सावधानियों के 'टिप्स' तथा प्रयोग के तरीके समझने आवश्यक होते हैं। कुल मिलाकर पठन-कौशल की आवश्यकता पड़ती ही है।

पढ़ने का सीधा संबंध समझने से है, इस बात में कोई दो मत नहीं हैं। किसी को एक पुस्तक देते हुए अगर हम यह कहते हैं कि इसको पढ़ो। तो इसका तात्पर्य यह कहना है कि 'इसको पढ़ो और समझो' ना कि 'इसको पढ़ो और मत समझो'। पढ़ना और समझना दोनों एक-दूसरे के साथ जुड़े हुए हैं। दूसरे शब्दों में, समझना ही पढ़ना है (स्मिथ, 1983)।

* *शोधार्थी,* शिक्षा विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

किसी भी लिखित (पाठ) को समझने के लिए हम अपने अनुभवों का इस्तेमाल करते हैं। परंतु, जब कक्षा की बात आती है तो पढ़ने की पूरी प्रक्रिया का रूप और उद्देश्य बदल जाता है। यह मुद्दा विचारणीय है कि पढ़ने का उद्देश्य क्या है और इस उद्देश्य को कौन तय करता है।

कक्षा में बच्चों द्वारा बोलकर पढ़ना

कक्षा में बच्चों द्वारा बोलकर पढ़ना – यह एक बहुप्रचलित अभ्यास है, जो कि भाषा की कक्षाओं का एक अहम हिस्सा होता है। किसी भी कक्षा के निर्धारित समय का एक प्रमुख भाग इस गतिविधि में लगाया जाता है। इसमें एक बच्चा बोलकर पढ़ता है और बाकी के बच्चे पाठ सुनते और देखते हैं। छात्र द्वारा बोले हुए शब्द और उसके लिखित स्वरूप (जो इस पाठ में हैं) – इन दोनों को बाकी के बच्चे मिलाते है, ऐसी अवधारणा है। इस गतिविधि का अभ्यास कई तरीकों से किया जाता है। हम इसके कुछ बिंदुओं पर बात करेंगे।

शिक्षकों के विचार

कई शिक्षकों का मानना है कि यह एक बहुत ही उपयोगी तरीका है। पढ़ना सिखाने के लिए इसका इस्तेमाल बहुत समय से चला आ रहा है। इसमें छात्रों को मौका मिलता है अभ्यास करने का। वह सुनकर, पढ़कर व देखकर पढ़ना सीखते हैं। इसके साथ ही, यह प्रक्रिया कक्षा में अनुशासन बनाये रखने में भी मदद करती है। इस प्रक्रिया के दौरान बच्चे शांत होकर बैठते हैं, क्योंकि उन्हें पता है अगर वे बातचीत करेंगे तो उन्हें पढ़ने के लिए कहा जा सकता है जिससे वे बचना चाहते हैं। एक कक्षा में सभी बच्चे एक समान नहीं होते। कुछ सक्षम पाठक हैं तो कुछ कम सक्षम पाठक भी हैं। कम सक्षम पाठकों पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती है।

शिक्षकों की भूमिका

इस पूरी प्रक्रिया में शिक्षक कुछ अहम बातों पर ध्यान रखते हैं। इन बातों में सबसे महत्वपूर्ण है—शब्दों का उच्चारण और विराम-चिन्हों का इस्तेमाल। इसके अलावा पढ़ने का तरीका, आवाज़ का उतार-चढ़ाव और आत्मविश्वास भी धीरे-धीरे विकसित करने पर ज़ोर होता है। ज़्यादातर, शिक्षक बच्चों के उच्चारण को ठीक भी करते जाते हैं और यदि बच्चा किसी शब्द पर अटके तो शब्द भी बता देते हैं। बच्चा जब पाठ का एक हिस्सा पढ़ लेता है तब शिक्षक उसका मतलब समझाते हैं। उसके बाद दूसरा बच्चा पाठ के आगे का हिस्सा पढ़ता है। यह पढ़ने और समझाने की प्रक्रिया चलती रहती है।

बच्चों की भूमिका

इस गतिविधि के लिए बच्चों का चुनाव करना मुख्यतः शिक्षक पर निर्भर करता है। इसके कुछ मुख्य तरीके हैं, जैसे– सक्षम पाठकों का चुनाव, एक पंक्ति (कक्षा के किसी भी तरफ से) से बच्चों का चुनाव और किसी भी बच्चे का नाम लेकर। इस बात का अंदाजा हर बच्चा लगा लेता है कि कक्षा में आगे बैठे बच्चों की बारी पहले आने की संभावना अधिक है। इसलिए, कम सक्षम पाठक कक्षा में पीछे बैठना पसंद करते हैं। उनको पढ़ने के लिए ना बोल दिया जाए, इस डर से वे अपना सिर नीचे झुकाए रखते हैं। इसके बावजूद

भी जिस बच्चे की बारी आने की उम्मीद होती है वह अंदाजा लगा, पाठ के उस हिस्से को पढ़ने की कोशिश करता रहता है। बच्चों पर इस प्रक्रिया का दवाब उनमें व्यग्रता उत्पन्न करता है। एक शिक्षक के अनुसार, सक्षम पाठक, हमेशा पढ़ने को लेकर उत्साहित रहता है, मनोबल भी बढ़ता रहता है। इसके विपरीत कम सक्षम पाठक हमेशा इस प्रक्रिया से बचने की कोशिश करता रहता है। कई कक्षाओं के अवलोकन में यह भी पाया गया है कि कई बच्चे इस गतिविधि के दौरान पढ़े जा रहे भाग को अपनी पाठ्यपुस्तक में ढूँढ़ते रहते हैं।

विचारणीय बिंदु

बच्चों की सहभागिता — सक्रिय या निष्क्रिय

इस प्रक्रिया में एक कक्षा की निर्धारित समय सीमा के दौरान तीन से चार बच्चों को ही बोल कर पढ़ने का अवसर प्राप्त हो पाता है। अन्य बच्चे इस प्रक्रिया में सम्मिलित हैं इस बात की अपेक्षा रखी जाती है। परंतु इस बात की पुष्टि ज़्यादातर नहीं होती। अब अगर हम कम सक्षम बच्चों पर विशेष ध्यान देने की बात पर विचार करें तो इस पूरी प्रक्रिया में उनसे बोल कर पढ़ने की अपेक्षा न के बराबर होती है, क्योंकि अगर कम सक्षम बच्चे कक्षा में बोलकर पढ़ेंगे तो इस प्रक्रिया में ज़्यादा वक्त लगेगा और कक्षा जो कि प्रायः तीस से चालीस मिनट की होती है, उसमें इतना कर पाने की संभावना नहीं होती।

पढ़ना — अर्थ के साथ

बच्चे जब बोल कर पढ़ते हैं तो उनका ध्यान शब्दों के उच्चारण पर और विराम-चिन्हों के प्रयोगों पर होता है। एक बच्चे के अनुसार, अच्छा पढ़ने का मतलब है बिना किसी शब्द पर अटके, विराम-चिन्हों पर रुकते हुए पढ़ना यानी अल्पविराम पर थोड़ा रुकना और पूर्ण विराम पर ज़्यादा। छात्र का पूरा ध्यान उच्चारण पर होना और शिक्षक का इसके बाद पढ़े हुए हिस्से का अर्थ बतलाना – *यह इस बात का संकेत है कि बच्चे से बोलकर पढ़ने के साथ अर्थ ग्रहण करने की अपेक्षा नहीं की जा रही। बल्कि, अर्थ बताने की पूरी ज़िम्मेदारी शिक्षक पर होती है*। समझते हुए पढ़ने का कोई प्रमाण कक्षा में प्रत्यक्ष रूप से नज़र नहीं आता। एक बच्चे के अनुसार, हम पढ़ते हैं, फिर सर (शिक्षक) समझाते हैं। सर (शिक्षक) अच्छे से समझाते हैं तो समझ में आ जाता है। इससे यह पता चलता है कि बच्चों के पास अपनी कोई रणनीति नहीं होती, अर्थ ग्रहण करने के लिए।

ग्रंथ सूची

सिन्हा, एस. 2012. *रीडिंग विदाउट मीनिंग – द डिलेमा ऑफ़ इंडियन क्लासरूम्स, लैंग्वेज एंड लैंग्वेज टीचिंग*. वॉल्यूम 1. अजीम प्रेमजी फ़ाउंडेशन एंड विद्या भवन सोसायटी, उदयपुर. 22–26.

स्मिथ, एफ़. 1983. *एसेज़ इंटू लिटरेसी – सलेक्टेड पेपर्स एंड सम आफ़्टरथॉट्स*. हाइनमैन एजुकेशनल बुक्स, ऑकलैंड.